स्थितियाँ : अनुभव

तथा

अन्य कविताएँ

राजेन्द्र किशोर

प्रकाशक
श्रीअजन्ता प्रेस (प्राइवेट) लिमिटेड
पटना-४

प्रथम संस्करण
श्रावण, १८७९
मूल्य २॥)

मुद्रक
श्री राजेश्वर झा
श्रीअजन्ता प्रेस (प्राइवेट) लिमिटेड, पटना-४

समर्पण

प्रभाशंकर को—

क्योंकि वह एक जिद्दी-किस्म का लड़का है,

श्यामसुंदर को—

क्योंकि उसे प्रभाशंकर की जिद्द पसंद नहीं,

रणधीर को—

क्योंकि उसकी अपनी सामाजिक नैतिकता है,

रामनरेश को—

क्योंकि वह रणधीर की सामाजिक नैतिकता को नहीं मानता।

इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ नया पथ, ज्ञानोदय, युगचेतना, राष्ट्रवाणी, क्षितिज, नई कविता, कल्पना, विविधा, आजकल, नई दिशा, धर्मयुग आदि विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।

क्रम

स्थितियाँ : अनुभव
तथा
अन्य कविताएँ

स्थितियाँ : अनुभव

[१]

कल जब शाम आयी,
   जाने कैसा लगा।
उम्र घटते - घटते दो पल रुक गयी,
जहाँ वह नीम की छतनार डाल झुक गयी;
और गंधश्लथ हवा आयी, दे गयी दगा।
तब भी, तब भी जाने कैसा लगा।

दर्द जो हुआ शाम के बाद
      मुझसे नहीं सहा गया।
लोग आए—
अपने - पराए
दिन भर की कथा पूछ गये।
किंतु मुझसे नहीं कहा गया—
दर्द जो हुआ शाम के बाद और मुझसे नहीं सहा गया।

ये घरौंदे जिन्होंने बनाये, दीप उन्हीं को जलाना है।
ये तरह-तरह की मूर्तियाँ बनायी हैं मैंने,
किंतु इन्हें उन्हीं को सजाना है।
और मैं जो हूँ—
एक, एकांत, आत्मनिष्ठ—एक अप्रतिपादित सत्य,
उसे इन घरौंदों में उन्हीं को बिठाना है।

कैसे जलूँगा इस साँसों की भीड़ में—
अप्रतिहत, अकेले ?
आपा-धापी में ठोकरों का डर है;
पड़ोस में बैरी बादलों का घर है।
कैसे जलूँगा इस साँसों की भीड़ में—
अप्रतिहत, अकेले ?

कथा मैंने उनसे कही, उन्होंने कही मुझसे,
कई फूल झर पड़े, कई पात झुलसे।
यों···कथा तो छोटी-सी थी,
पर व्यथा बहुत बड़ी थी,
और कहने-सुनने के लिए मिली एक घड़ी थी।
सो, कथा मैंने उनसे कही, उन्होंने कही मुझसे,
कई फूल झर पड़े, कई पात झुलसे।

स्थितियाँ : अनुभव

[२]

रात परदे में नहीं है।
सरेआम सड़कों पर बिजली के खंभों के नीचे खड़ी है रात।
बाजारू गीतों से तबीयत बहल जाती है,
फिर भी उन्होंने खत का जवाब माँगा है।
अपने इस हद तक बेमुरौवत होंगे, क्या खबर थी!
उस दिन दूकान के आईने में
खुद को देखा था,
खुश हुआ था :
वह उनकी नजर थी।

रात काली है, मगर रोशनी में भली लगती है।
उम्र का हिसाब कौन करे ?······
कुछ ढली लगती है।
यों भी आजकल बड़ी बेग़ैरत, बेहया और एक हद तक बेमतलब
जिंदगी की यह सूनी - सँकरी गली लगती है।

हिचकियाँ : अनुभव

खिड़कियाँ खुल गयीं। कि दरवाजे बंद हो गये।
बाहर की दुनिया से जोड़ती है हवा। बस।
पहलू बदल - बदल कर दर्द उठता है,
इसीलिये कोई हमदर्द नहीं रहा।
अजीब बात है। फिर भी मरने का मन नहीं होता।
मुझसे जुदा मेरा कोई भी क्षण नहीं होता।

बिल्कुल बाजार - भाव है दिल,
खुदरा या थोक बिकता है।
फिर भी हैरत है,
पलकें बिछाये रात हो गयी।
विज्ञापन बेअसर हुआ,
काम न आयी कोई दुआ;
आज का हिसाब क्या होगा?
खत का जवाब क्या होगा?

स्थितियाँ : अनुभव

[३]

प्रस्तुत है उत्तर, अनुत्तर नहीं हैं वे।
वे विधायक हैं।
प्रत्येक अशुद्ध कर्म की व्याख्या तथा स्थापना के लिये
नया विधान प्रस्तुत है।
अप्रस्तुत मैं हूँ—विधाता !
और विधाता से विधायक बड़ा है !!

अनुचर हूँ आपका, हे प्रणम्य देवता !
रिद्धि-सिद्धि कुशल-क्षेम आपकी कृपा से है।
कल का बनजारा आज सभ्य हो गया।
दुख का परिमाण तो अनिश्चित है,
सुख का है निश्चित;
ज्यादा मिले - न - मिले, कम तो मिलेगा नहीं,
आश्वस्त हूँ।
अनुचर हूँ आपका, हे प्रणम्य देवता !

स्थितियां : अनुभव

अक्सर लोग पूछते हैं मेरा परिचय,
सच, क्या है ?
कह दूं कि मैं विश्वकर्मा हूँ :
यह स्थापत्य मेरा है ?
कह दूं कि मैं गंधर्व हूँ :
ये कलाएं मेरी हैं ?
कह दूं कि मैं ब्रह्मा हूँ :
ये रूप मेरे हैं ?
नहीं, यह ग़लत है ।
मैं अपने अंशज विधायकों की परिचयहीन प्रजा हूँ ।

स्थितियाँ : अनुभव

[४]

यह जो एक प्रश्नचिह्न मेरे अस्तित्व पर आकर बैठ गया है,
यह जो एक कठिन मौन मेरे स्वर में आकर पैठ गया है,
बस, इसीलिये, इसीलिये मैं बोल नहीं सकता ।
और यों भी
मैं अपने अभिभावकों के मनोरंजन की प्रक्रिया में
उन्हीं के द्वारा उनके व्यक्तित्व से साधिकार संयुक्त
अपनी ही भूमि से निष्कासित अर्जुन हूँ ।
मेरी आत्मा द्रौपदी
किसी दुर्योधन की राजसभा में
किसी दुःशासन के द्वारा निरावरण किये जाने के लिये प्रस्तुत है ।

मेरा धनुष
राजा विराट के राज्य के अन्तर्गत या बहिर्गत
(यानी कहीं भी)
किसी पेड़ पर छिपा कर टाँगे जाने के लिये है।
मेरी कला, मेरी चेतना, मेरी संस्कृति बृहन्नला बनने के लिये है।
मेरा पौरुष किसी कीचक के द्वारा अपमानित होगा,
किन्तु मुझे सहना है;
और अपने अभिभावकों के अनुशासन में
(उनके द्वारा तथा उन्हीं के लिये वचनबद्ध)
लहँगा पहन कर चुपचाप कमरे में रहना है।

उत्तरा को मै पुत्रवधू बनाऊँगा।
एक दिन मेरी अनुपस्थिति में किसी की प्रतिष्ठा के लिये
चक्रव्यूह-भेद के निमित्त प्रस्तुत होकर अभिमन्यु मारा जायेगा।
जयद्रथ-वध से असंतुष्ट, संतप्त, व्यथित मेरी आत्मा की
सांत्वना के लिये
तथा बाद में मेरा उपयोग किया जाने के लिये
उसकी आयु के संबंध में एक कथा गढ़ी जायेगी,
मुझसे कहा जायेगा—यह सब निरर्थक है।

दो राजाओं के परस्पर युद्ध में मैं नायक बनाया जाऊँगा।
गांडीव की टंकार से आतंकित जन मुझमें इन्द्र की कल्पना करेंगे।
रणक्षेत्र में मेरी उत्तेजना के लिए गीता का दर्शन प्रस्तुत किया जायेगा।
मैं पितामह भीष्म, गुरु द्रोण, सहोदर कर्ण का
वासुदेव कृष्ण के निर्देशन में वध करूँगा।

किंतु स्वर्ग की यात्रा में सुभद्रा मेरे साथ नहीं होगी।
पहले द्रौपदी, फिर मैं गलूँगा।
अग्रज युधिष्ठिर धर्मराज कहलायेंगे, आदर्श और पूज्य होंगे।

यह ग़लत है
कि मेरा कोई निजी व्यक्तित्व है।
यह ग़लत है
कि मेरे पिता पांडु हैं,
जिनके अपरिमेय पौरुष को
सूर्य-इन्द्रादि विभिन्न रूपों में ग्रहण किया गया,
यह ग़लत है
कि मेरी माँ कुंती हैं,
जिसने इन विविध संज्ञाओं-विशेषणों को
धारण तथा रूपायित किया।
यह सब ग़लत है।
मैं एक खिलौना हूँ—सोद्देश्य,
द्वारकाधीश कूटनीतिज्ञ वासुदेव कृष्ण का,
महाभारत - विजयी धर्मराज युधिष्ठिर का!

आज का मनुष्य

प्रच्छन्न अंधकार :
हवा आती है
लुक - छिप कर
        दुराचारिणी ।
दो - चार बदचलन सितारे
बादलों की ओट में चले आ रहे ।
हारा—
थका—
लुटा मनुष्य गुमसुम देख रहा—
सारी दुनिया दीर्घजिह्वा - सी पापरत,
इन्द्र का वज्र खंड - खंड ''।
आहत सांसों की हिम शिला गलती है :

ठिठुर कर टूट रहीं हड्डियाँ···उफ़ !
कहने को बहुत कुछ है, कहते नहीं बनता,
वाणी की तपस्या दर्द की ताड़का से हार गयी ।
(राम ! ईश्वर !! अजन्मा !!! ....हे राम !!!!)

लगता है,
कहीं कोई ठौर नहीं ।···
आज का मनुष्य
गर्भ से धक्के देकर निकाला हुआ
ऋषि - पुत्र !

बदनामी की मौत

बड़े बाबू के परिवार की लड़कियों की नाईं
मेरी विवश इच्छाएँ शासन में रहती हैं ।
(खिड़कियों से भी
बाहर की दुनिया में ताक-झाँक मना है ।)
मगर
फिर भी,
हर रोज
बड़े बाबू के आते ही दफ्तर
जैसे कम्मो (यानी कामिनी) लड़ाती है आँखें,
मेरी इच्छाएँ भी आँखें लड़ाती हैं !
(जैसे बड़े बाबू जान कर भी नहीं जानते,
मुझे भी इस बात की कोई खबर नहीं ।)

लेकिन
एक दिन
निश्चय ही
आधी रात को
बड़े बाबू की क्वाँरी बत्तीससाला लड़की की नाईं
मेरी इच्छाएँ भी भाग जाएँगी
किसी बदजात आवारा कुत्ते के साथ।
उफ़, वह बदनामी की मौत! ...
और—

❀

पहली तारीख

आज महीने की पहली तारीख है
और मेरे हाथ में तनख्वाह के रुपए हैं !

मुझे तुम्हारे लिए सुख खरीदना है।
मुझे तुम्हारे लिए खुशी खरीदनी है।
मुझे तुम्हारे लिए चैन खरीदना है।
मुझे तुम्हारे लिए हँसी खरीदनी है।

तुम्हारी साड़ी का जो पल्ला तार-तार हो गया है,
उसकी चंदगी को रँगने के लिए रंग चाहिए।
तुम्हारी चोली, जो चवन्निया वेश्याओं की तरह घिनौनी और
बेशर्म हो गई है,
उसकी ह्या को ढँकने के लिए पल्ले का रंगीन होना जरूरी है।

मुझे तुम्हारे लिए दिन खरीदने हैं ।
मुझे तुम्हारे लिए रातें खरीदनी हैं ।
मुझे तुम्हारे लिए किस्से खरीदने हैं ।
मुझे तुम्हारे लिए बातें खरीदनी हैं ।

तुम्हारी कलाइयों के गीतों को फिर से शुरू करना होगा,
मुझे इस भयानक खामोशी से डर लगता है ।
तुम्हारे पाँव की आहटें पत्थर-सी बजती हैं,
मुझे यह झरता हुआ मकान भूतों का घर लगता है ।

तुम्हारे वे पतले-पतले होंठ,
जिनके फैलने से मेरी दुनिया फैल जाती है,
तुम्हारी वे गोरी-गोरी मांसल बाँहें,
जिनके बंधने से मेरा विहंगम व्यक्तित्व बँध जाता है,
तुम्हारी वे गाती-गाती-सी आँखें,
जिनके हर ताल पर मेरे सपने बौरा जाते हैं
और जिन्हें मैंने ब्याह के दूसरे ही दिन
सपनों के महाजन के यहाँ बंधक रख दिया—

मैं उन्हें छुड़ाना चाहता हूँ—
ज्यादा नहीं, सिर्फ दो दिनों के लिए ।
आज महीने की पहली तारीख है
और मेरे हाथ में तनख्वाह के रुपए हैं ।

दर्द का स्वामी कौन है?

एक के आँचल में चमेली के फूल हैं।
गूँथेगी माला।
यह माला पहनेगा उस आँचल का रखवैया।

एक के अधरों पर यौवन का हास है—
अधखिला, संकुचित;
यह हँसी उसके रसिया की है।

एक की आँखों में रंग है, वसंत है।
(तरह-तरह के रंगीन फूल और तितलियाँ।)
इस वसंत पर प्रीतम का हक है।

एक की छाती में जीने का दर्द है—
जहर पीने के बाद का कड़ुआ दर्द।
इस दर्द का स्वामी कौन है?

पाँच चुंबन

पहला गीत माँ ने गाया—परियों का गीत ।
गद्‌गद् नेह की स्वप्निल थपकियाँ जागीं और सोयीं ।
बादलों का देश ‥ जहाँ लाख-लाख ज्योति और रंग
माँ के खिलखिलाहट भरे परियों के गीत में
खुले और बँधे ।
ओ माँ, पहला गीत गाया है तूने,
पहला चुंबन तू ले ।

दूसरा गीत बापू ने गाया—शिक्षा का गीत ।
शासन के कठोर नियंत्रण में
संस्कार के विकास के कोमल गीत रचे ।
(कर्ण का त्याग और अर्जुन की वीरता,
राम का शील और गांधी की धीरता
मानो

कर्म का क्षेत्र—जीवन और मृत्यु !)
ओ बापू, दूसरा गीत गाया है तुमने,
दूसरा चुंबन तुम लो ।

तीसरा गीत भइया और बहना ने गाया—झगड़े का गीत ।
(जीवन का मधु —कभी हास, कभी रुदन,
सपने का झगड़ा और झगड़े का सपना ।)
ओ भइया, ओ बहना, तीसरा गीत गाया है तुमने,
तीसरा चुंबन तुम लो ।

चौथा गीत 'रानी' ने गाया—गृहस्थी का गीत,
एक साथ ममता, स्नेह, प्रीति, क्रोध, हास, रुदन और वासना
का गीत ।
कभी फटी हुई साड़ी के आंचल का गीत,
कभी नई सिली ब्लाउज के वायल का गीत,
कभी मानने का गीत,
कभी रूठने का गीत,
कभी बुझे हुए चूल्हे-दियासलाई का गीत,
कभी भागे हुए नौकर और दाई का गीत,
कभी आने का गीत, कभी पाई का गीत,
कभी बाप और भाई, कभी माई का गीत
यानी
गृहस्थी का गीत ।
रानी मेरी, चौथा गीत गाया है तुमने,
चौथा चुंबन तुम लो ।

पाँचवाँ गीत बेटों और बेटियों ने गाया—
क्रोध, घृणा, श्रद्धा और आदर का गीत।
बेटो और बेटियो, तुम्हारा गीत सबसे निराला है—सबसे अच्छा
तुम्हारी श्रद्धा, तुम्हारे आदर का सुख है मुझे;
तुम्हारे क्रोध, तुम्हारी घृणा का दुख है मुझे,
मगर कोई शिकायत नहीं।
हाँ, जीवन के अनुभव का एक बोल कहता हूँ—
बाप कभी बनना मत पैसे न हों यदि,
बेटों और बेटियों के क्रोध और घृणा से बचना।
मेरे बेटे और बेटियो, पाँचवाँ गीत गाया है तुमने,
पाँचवाँ चुंबन तुम लोगे?

❀

अंधक

यह कथा अधूरी है, रहे ।
एक अप्रत्याशित बिंदु से प्रारंभ होकर
यह जहाँ पहुँची है, वहीं विराम डाल दो ।

दूसरी एक बात कहता हूँ ।
ये हैं न—अड़ोसी - पड़ोसी...
यानी ये लोग—
सब - के - सब अंधक हैं ।
जिसने इन्हें अपने विस्तार के लिए
आवेश के एक क्षण विशेष में
बिना सोचे - समझे पैदा किया,
वही इन्हें अपने विस्तार के लिए
आवेश के एक क्षण विशेष में
बिना सोचे - समझे मार डालेगा ।

मुझे चीन्हो

किरण यह मेरी है;
मैं ही हूँ मित्र, वरुण, सविता
और पूषा भी मैं ही हूँ।
महलों के लोग, जरा मेरी ओर देखो,
मगर देखोगे कैसे ?
तुमने सूरज की ओर कभी देखा है ?

धरती के लोगो, लो, मेरी किरणों का हल लो,
धरती को जोत दो।
बोने के वक्त मेरी किरणों को बो दो।
काटने के वक्त मेरी किरणों को काटो।
बेचने के वक्त मेरी किरणों को बेचो,
किरणों की कीमत में किरणें ही मांगो।

वे आएँगे—(महलों के लोग)—
लिए चाँदी और सोना,
चलाएँगे जादू, जगाएँगे टोना;
वे मनाएँगे,
बातें बनाएँगे,
ढंग - ढंग से रिझाएँगे,
लेकिन न खाना तरस, बेंचना न किरणें,
देख लेना
एक दिन
किरणों के बिना वे भूखे मर जाएँगे ।
(किरणों की कीमत वे किरण कहाँ पाएँगे ?)

सुनो मेरे दोस्तो,
किरणों की करते हुए खेती
एक दिन तुम सूरज बन जाओगे ।
उठो, जरा मेरी ओर देखो·······
मुझे चीन्हो ?
यह पसीना········

❀

गंध आई

गंध आई।

न आँचल,
न हवा,
न धुले - धुले पाँव,
न अँगुलियाँ पतली;
छिछली

आँखें भरीं; उठीं—
गिरीं
बाँहें;
चाहें
हम

जितना उन्हें चाहें :
गिरेंगी
ही
बाँहें

गिरेंगी ही;
पी,
रे पी
गंध। आई।
गंध
आई।

❀

लेटी हुई रात है

लेटी हुई रात है।
बात है
कोई
मेरे मन में : उनकी :
सौगात
है :
हर
ओर :
तनाव है।
भाव है
मेरा। हाव : उनका।'''
तुम
गुमसुम हो;
स्थिर;
? धरा;
बंजर।

स्थितियाँ : अनुभव

घर मेरा उदास है । भाव है मेरा ।
हाव :
उनका ।
प्यास ।
है । पुरइन का पात है ।
वे
कितनी कोमल हैं ।
बात है
कोई
मन में : सौगात है : उनकी; रात है ।
ले
टी
हु
ई
रात
है ।

❀

स्थिति

सांस ।—
   टूटी हुई ।
—धरती । नम ।
पौध नहीं ।······कुछ ।
              —नहीं ।

आपकी ख़ामोशी ।

हवा लूल्ही । आंचल नहीं सँभला ।
—सँभला ?
      जी ।
पी गई ।

जवानी जोश पर है । नकाब उठने दीजिए ।

बहुत अनुर्वर है रात ।
विधवा नहीं है । कि पछताएँ । क्या होगा ?

अहल्या उठ । पाँव चलें ।
स्पर्श नहीं; जलते हैं ।
निगाहों से चलते हैं ।
बात...? कुछ ।
—नहीं ।
यों ही । पोध नहीं ।
नम । धरती ।—
टूटी हुई ।
—साँस ।

❀

पल

तरंगों से मन भरा।
रंगों से तन भरा।

हराभरा हो गया उपवन क्षण का।
छा गया व्योम मेरा मुझ पर, उन पर, सब पर।
स्वर अकुलाए मेरे, उनके, सबके; मैं नहीं बोला,
वे भी नहीं; कोई नहीं, कहीं-कहीं किंतु रंग छलका
फिर भी
पल का।

❃

पेड़ चाँद का

मैं—
        ने
देखा
        पेड़ ?····
चांद का ।
तलैया—
        अक्षतयौवना—
        कुमारी—
                    से–वा–र
                      से
                      ढँकी—।
                      कि
                      ना
                      रे ।
बेचारे ।
लोग नहीं देख पाए पेड़ ?····
                      ?

चाँद का । मैं—
ने
देखा । सुबह - सुबह
आँखें
म
ल
ते
रास्ते
ने
देखा ।—
मैं—
ने
देखा
?…पेड़….
चाँद का ।

ठिठक गई
हवा
चकई
सेवार—
जब
हि—ले
मि—ले
—दोनों—
!
और पेड़ ?….चाँद का ।—

किसी ने न देखा ।
झुका
पेड़ ?....
देर तक
चाँद का ।
थका ।—
—देखते—देखते—में—
ने
देखा
? पेड़
? चाँद का ।

अलसाए ।
आए ।
गए ।
आई—
गई—
वे !—
भी !!
मैं—
ने—
ही
देखा पेड़ ?
चाँद का !

❀

आने दे नींद के पखेरू को

लहर लेती है चाँदनी, तो लेने दे,
तारों को सपने की नाव खेने दे,
बादलों को धरती की छाती पर छाने दे,
आने दे, नींद के पखेरू को आने दे।

किरणों ने चुरा ली सरसों की चम्पई ?
तारों ने चुरा लिए प्राणों के गीत कई ?
शोर-गुल मत कर, चोरों को चुराने दे,
हट जा, नींद के पखेरू को आने दे।

तंग क्यों करती है नैनों के चैन को ?
प्राणों में रिसने दे अलसाती रैन को,
बावरी, मत छेड़, चाँद को सो जाने दे,
छोड़ दे, नींद के पखेरू को आने दे।

*

तुम नहीं आईं

फिर नया सिंगार जागा प्रीति के वन में,
खिलखिला कर हँस पड़ा कोई विकल मन में,
एक स्वर में गीत सौ फूटे, बजी मादल;
तुम नहीं आईं, मगर ये आ गए बादल !

साँस की वंशी बजी, नाची लहर तन में,
स्वप्न ने सौ खेल खेले एक चितवन में,
हो गया सुकुमार पंछी प्राण का चंचल;
तुम नहीं आईं, मगर ये आ गए बादल !

हर चरण पर फूल झूमे, खिल उठीं कलियाँ,
मैं जिधर भागा, हुईं आबाद कुल गलियाँ,
मैं हँसा, आए सँवर अरमान दल-के-दल;
तुम नहीं आईं, मगर ये आ गए बादल !

बाँह खोले दौड़ आई साँझ अलसाई,
छेड़ बैठी दूर वन में रात शहनाई,
छू गया मुझको किसी की गंध का आँचल;
तुम नहीं आईं, मगर ये आ गए बादल !

क्रूर के आकाश ने भी रंग दिखलाया,
चाँद भी पगली घटा की ओट हो आया,
चाँदनी ने आँख में जब रच लिया काजल;
तुम नहीं आईं, मगर ये आ गए बादल !

*

प्रथम किरण प्यार की

प्रथम किरण प्यार की
नदिया पर टूट गई,
अलबेले माँझी को
साहिल पर लूट गई,
नैया के पैंया हुए डगमग, लहरों की चुनरी फिसल गई।

प्रथम किरण प्यार की
मधुवन पर छा गई,
अलबेले माली को
गजब हँसी आ गई,
हो गया सारा जग जगमग, तितली की चोली मचल गई।

प्रथम किरण प्यार की
खेतों पर झुक गई,
मौजी हलवाहे की
दो पल गति रुक गई,
जमाना अनजाना लगा लगभग, प्राणों की बोली बदल गई।

पाती तुम्हें लिखूँ तो कैसे

पाती तुम्हें लिखूं तो कैसे, डर लगता है,
और बड़ा पाती लिखने को मन करता है;
कुछ घड़ियाँ हैं ऐसी जो उकसा देती हैं,
बहुत सँभाले मन को भी बहका देती हैं;
सुनो, व्यर्थ का मान पिया से कर बैठी हो,
और पिया का चैन सदा को हर बैठी हो।

आज चाँद ने नया-नया सिंगार किया है,
और चाँदनी ने चंदा को प्यार किया है;
आज पपीहे ने पी-पी की रटन लगाई,
आज चकोरे ने अंतर में अगन जगाई;
देखो, रात सजी, पल-पल अभिसार बना है,
आज पिया से मान-मनौती सख्त मना है।

भाभी मेरी बात न समझे, पीर न जाने,
हर पल करे ठठोली बैरिन, रीत न जाने,
कहे—उदास बनो मत लाला, दिन नियराया,
बिदा कराने का मौसम फागुन चढ़ आया।
भाभी मेरी जात तुम्हारी, कठकरेज है,
भइया की खातिर मिजाज की बड़ी तेज है !

सात बरस की बहना मेरी, ननद तुम्हारी,
सबकी सरस सहेली, नन्ही राजकुमारी,
बैठ पास में बात तुम्हारी कर जाती है,
छवियों की बरसात नयन में भर जाती है,
कहती है—भइया, भाभी को लिखो न पाती,
उनके बिना रचा गुड़िए का ब्याह न पाती।

पाती तुम्हें लिखूं तो कैसे, डर लगता है,
और बड़ा पाती लिखने को मन करता है;
कुछ घड़ियाँ ऐसी हैं जो उकसा देती हैं,
बहुत सँभाले मन को भी बहका देती हैं·····

जरा झुकने दो मेघ को

जरा झुकने दो मेघ को,
रुकने दो मेघ को
बरगद की प्यासी-प्यासी छाँह में
रुकने दो।
झुकने दो।

दो नयना ताक रहे,
खिड़की से झाँक रहे,
दूर कहीं······कहीं अरे नीलम के देश से
आते हैं सपनों के राजकुँअर,
मन पगला जाता है लहर-लहर;
आँचल भी जाने क्यों बैरी हुआ,
तड़प रहा प्राणों का नन्हा सुआ;
बँधने दो खेतों के राजा की लाडली की बाँहों में मेघ को
रुकने दो।
झुकने दो।

सपने अकुलाते हैं,
दौड़-दौड़ आते हैं—
पैंया में कान्हा का घुंघरू है,
कानों में कुंडल है सोने का;
बादल की पालकी में बन-ठन कर आया है
दिन बैरी जादू का, टोने का;
इस साल कंगन गढ़ाए बिना कौन भला मानेगा !....
अँजुरी के दोने में भर-भर कर सोने का दाना
जब कोई उड़ेलेगा,
कौन है सोनार जिसकी छेनी का गीत नहीं जागेगा !
पहले ही पूत की दुलारी महतारी सोनारिन की यादभरी
चितवन
जब झुक कर जगाएगी,
तन कर जगाएगी,
कौन है सोनार जिसकी छेनी का गीत नहीं जागेगा !
सजने दो खेतों के राजा के लाडले की आँखों में मेघ को,
रुकने दो।
झुकने दो।

❀

बगुलों की पाँत

उड़ आई बगुलों की पाँत आज सुबह-सुबह,
लिए हुए तेरी सौगात आज सुबह-सुबह

बंधन को खोल गई
आकर पुरवैया,
छोड़ कर किनारा चली
सुधियों की नैया,
लहरों से भींग गया गात आज सुबह-सुबह

कहाँ बजी वंशी
धुन कहाँ लहराई,
पलकों पर सपनों की
परी उतर आई,
डोल गए प्राणों के पात आज सुबह-सुबह

मन को मनाया
मगर एक नहीं माना,
अपनों के बीच हुआ
बड़ा अनजाना,
फैल गई घर-घर में बात आज सुबह-सुबह

❀

वसंत आ गया

आ, री, सुन, वसंत आ गया,
मुझे अपने आँचल में चुन ले ।

शोर-ो-गुल में तबीयत नहीं लगती;
आ, अकेला कर दे मुझे,
अपनी पुतलियों में छिपाकर धर दे मुझे ।

आ, मुझे अपनी साँसों में बुन ले ।
वसंत आ गया, कल का भरोसा क्या ?
मुझे अपने आँचल में चुन ले ।

ताप जरा कम कर दे सूरज

ताप जरा कम कर दे सूरज, चेहरा किसानिन का काला पड़ गया।

बैलों की गर्दन की गिल्लट की घंटी ने
छोड़ दिया रह-रह कर टुनटुनाना,
मेड़ों पर बैठी किसानिन की छोरी ने
छोड़ दिया रह-रह कर गुनगुनाना,
ताप जरा कम कर दे सूरज, कन्हैया के तलुवे में छाला पड़ गया।

छोड़ दिया बरगद की फुनगी पर बैठे हुए
कागा ने रह-रह कर रट लगाना,
इमली की छतनार डाली में छिप-छिपकर
पगले गौरैयों ने चहचहाना,
ताप जरा कम कर दे सूरज, कोयल के होठों पर ताला पड़ गया।

सूख गई बेली-चमेली की डाली और
तितली ने छोड़ दिया चूम जाना,
अब कोई देखेगा कैसे निगाहों से
एक साथ लाख रंग झूम जाना ?
ताप जरा कम कर दे सूरज, आँखों में जैसे मसाला पड़ गया ।

५

अनुभूति

मैं ही हूँ पुरुष।
और मैं ही हूँ नारी—
मिथुनीकृत, युगलित।
तुम मुझसे अलग कहाँ हो?
अगर हो, तो आवाज दो।

हे प्रभु

हे प्रभु, मेरी आत्मा को रस दो।
सफर करने के लिए मोटर, ताँगा, बस दो।
और यदि यह सब संभव न हो, तो सुनो,
मुझे किसी कद्दूकस में कस दो।

चौपदा

मैं बैठा हूं बीच महल में और महल है रेत का,
चित्र टँगा है—सूखे - नीले आसमान के खेत का,
बड़ा मजा है; आती है आंधी गोरी के गांव से,
महल दोमहला हो जाएगा लगकर उसके पांव से ।

टूटने की कॉमेडी

तुमने हंसी बेची,
रोए,
झरे,
टूट गए।
मैंने जो कुछ था, बेच दिया।
फिर भी, मैं टूटा नहीं हूं
और किसी से भी रूठा नहीं हूं।

मुझ से कलियों ने कहा—झरूंगी,
मैंने कहा—झर जाओ।
मुझसे गीतों ने कहा—मरूंगा,
मैंने कहा—मर जाओ।
मुझसे चांदनी ने कहा—गलूंगी,
मैंने कहा—गल जाओ।
मुझसे सपनों ने कहा—जलूंगा,

मैंने कहा—जल जाओ।
मगर आँसुओं ने ज्योंही कहा—ढुलकूँगा,
मैंने कहा—रुको। फिर, नीलाम कर दिया।
कुड़बुड़ाती पीड़ा ने तीखी निगाहों से देखा
और गर्दन घुमाई
कि मिनटों में काम ही तमाम कर दिया।
उदासी उठी, दूर से सलाम कर दिया।
तबीयत रोने को मचली, तो नाता ही तोड़ लिया।
बाकी बचा मन, उसे जाने कहाँ छोड़ दिया।

जो कुछ भी था: मैं,
अब अलग-अलग बँटा हुआ है;
और जिसमें जुड़े थे सब—डोर मेरे हाथ में है।
देखो जी, तमाशा जरा देखो—
मैं टूटा नहीं हूँ
और किसी से भी रूठा नहीं हूँ!

*

प्रह्लाद

अग्नि में दो इसे,
पर्वत से गिरा दो,
गजराज के चरणों तले रख दो इसे,
जैसे भी चाहो, पीड़ित करो,
यह नहीं होगा अनुचर तुम्हारा, नहीं होगा ।

यह मेरी संतति है—
मेरी कल्पना, कामना, कांक्षा की महत् सिद्धि;
मैंने इसे संघर्ष की प्रक्रिया में
अपने अस्तित्व की उपाधि के रूप में जन्म दिया है ।

मैं हिरण्यकशिपु नहीं हूँ जी·—
पुरुषादक;
रे मिट्टी पर सोता हूँ और अन्न मेरा आहार है !

*

एक आत्मकथा

बीसवीं सदी की जटिल समस्याओं ने
मुझे उत्पन्न किया।
अकालमृत्यों के परिवार ने
मेरा लालन-पालन किया।
शत-शत वैयक्तिक-पारिवारिक-समाजिक ग्रंथियों से
मेरे व्यक्तित्व का निर्माण हुआ।
आगे-पीछे के युग ने
मुझे हैरत से देखा—
यह···
यह क्या है ?

कुछ ने ताने मारे,
कुछ ने व्यंग्य कसे,
कुछ ने ऐसी श्रद्धा से मेरी ओर देखा
कि मैंने अनुभव किया—
मैं तीनों देवताओं की सम्मिलित शक्तियों का

नया परूष रूपांतर हूँ ।
घबरा कर मैंने सोचा—
मुझे संहार करना ही होगा
अपना या युग का ।

सर्वप्रथम
मैंने अपनी लोकशासित कामपीड़ित
प्रिया की वेणी से प्रयास किया—
आत्महत्या ।
किन्तु आज के वैज्ञानिक युग में
इतनी सहज मृत्यु संभव नहीं ।

एक दिन
सुना:
लोकशासन से आतंकित होकर
मेरी कामपीड़ित प्रिया ने
ब्याह कर लिया ।
डाक्टरों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा:
दो नए रोग पैदा हो गए ।
मेरी प्रिया अकामा हो गई
और मैं आतंकवादी ।

कई साल बीते ।
एक दिन मैंने फिर प्रयास किया—
हत्या (?)…आत्महत्या (?) ।

तहलका मच गया ।
दो वकीलों और कई डाक्टरों के
महीनों वाद-विवाद के बाद
निर्णय हुआ—
प्यार, बस, प्यार :
इसे कहीं से भी प्यार नहीं मिला;
यह हत्या (आत्महत्या ?) नहीं है
प्यार की खोज है ।

सात वर्ष बाद
एक चरित्र परिष्कारक-केन्द्र से निकलने पर
मैंने श्री सत्यनारायण-पूजा का
मासिक आयोजन किया ।
कीर्त्तन-मंडलियों में घूमा ।
तीर्थ-यात्रा की ।
कंगाल हरिजनों से लेकर
सम्पन्न ब्राह्मणों तक को उपहार दिए ।
किंतु आत्महत्या के इस तीसरे प्रयास में भी
मैं नितांत असफल रहा ।

तब,
हार कर
चौथे प्रयास के सिलसिले में
मैंने एक अत्यंत कुरूप औरत से ब्याह कर लिया,
और बारह साल के एक युग में

चौदह बार पिता बना।
(चौदह आत्महत्याएँ !) ।
मगर......
कोई भी जिया नहीं,
किसी ने भी माँ का दूध पिया नहीं।
डाक्टरों ने बताया—
इन अकाण्डजातों के पीछे
माँ के शरीर में
विटामिनों की कमी का राज है।
यानी ?....
(ओ अकाण्डजातों की माँ,
यह तो मैं भूल ही गया था
कि तुम अकालमृत्यों की पुत्री हो !)

एक दिन
लोगों ने
मुझे परिव्राजक के वेश में देखा
और श्रद्धा से शीश झुका दिए।
नर - नारी
(जिनमें निपूती युवतियों की संख्या
विशेष थी)
मेरे मोक्षकामी व्यक्तित्व के आगे
समर्पित हो गए।
(मोक्ष शब्द की वैज्ञानिकता पर ध्यान दीजिए।
मोक्ष :
असंख्य ग्रंथियों से आच्छादित व्यक्तित्व की

सचेष्ट निर्ग्रन्थता ।)
किंतु आत्महत्या का यह प्रयास भी
असफल रहा ।
अपने चारों ओर फैले आकर्षणों की
परिधि में
मोक्ष की कामना लिए
(कामना ! .....उफ, यह नहीं गई ।)
चक्कर काटता रहा ।
वृत्त निरंतर सिकुड़ता गया,
कामना निरंतर बढ़ती गई ।

तब
मैं
आत्मघात के प्रयासों में निरंतर असफल होकर
अपने सम्पूर्ण परिपार्श्व पर टूट पड़ा ।
रीति तोड़ी,
नीति तोड़ी,
प्रीति तोड़ी ।
आगे - पीछे के युग ने मुझे हैरत से देखा —
यह.....यह क्या है ?

एक दिन सामाजिक रीति-नीति के दिग्गजों ने
मेरे विध्वंसक व्यक्तित्व से आतंकित होकर
मुझे क़ैद कर लिया ।
बड़े-बड़े डाक्टर आए ।

मेरे मस्तिष्क की विविध परीक्षाएँ हुईं ।
प्रेस कम्यूनिके निकाला गया—
'····'नामक व्यक्ति के विध्वंसक कार्यों के मूल में
दमित काम और हीन भावनाएँ हैं ।'
तय हुआ—
और बिजली की कुर्सी पर बैठाकर
मेरी वैज्ञानिक मृत्यु की व्यवस्था कर दी गई ।

तो
आज तो मैं नहीं हूँ ।
किंतु मरने के वक़्त मैंने जो सोचा था
संक्षेप में बता देता हूँ ।
यह सही है कि मेरे कार्यों के मूल में
दमित काम तथा हीन-भावनाएँ थीं,
किंतु मैं खुश हूँ
कि मेरे विध्वंसक कार्यों के परिणामस्वरूप
अब कोई व्यक्ति
न तो अकाण्डजातों का पिता होगा,
न किसी की माँ अकालभृत्यों की पुत्री ।
और यह भी कि अब, शायद, कोई भी व्यक्ति
आत्महत्या के प्रयोगों की ओर अग्रसर नहीं होगा ।

एक क्षण और ।
सुनिए,
मरने के वक़्त मेरे मन में एक छोटी-सी आरज़ू भी थी—

स्थितियाँ : अनुभव

मेरे मरने के बाद
कोई भी मेरी आत्मा की सांत्वना के लिए
प्रार्थना न करे,
मैं आत्मा में विश्वास नहीं करता !

*

एक कार्टून के प्रति

प्रभु, मैं आपके लिए 'स्टेट एक्सप्रेस' का डब्बा मँगवा रहा हूँ;
मेरी बीवी चाय बनाने गई है;
मेरा मुन्ना चंदन घिस रहा है;
मेरी मुन्नी माला गूँथ रही है;
मेरा नौकर बाजार से रोली लाने गया है
(उसे पड़ोस की नौकरानी से मुहब्बत है,
काश ! उसे रोज दो घंटे की फुर्सत मिल पाती !)
और आपके दर्शन दुर्लभ हो गए हैं।
आज भी बड़ी मुश्किल से मैं आपको पहचान पाया।
मुस्करा कर झूठ बोलते-बोलते
आपके दोनों बदतमीज होंठ बुरी तरह फैल गए हैं,
लोगों को इतमीनान दिलाने के लिए झूठी क़समें खाते-खाते
आपकी तोंद बुरी तरह फूल गई है,
फिर भी, आपकी सच्चाई पर विश्वास करते हुए
मैं जानना चाहता हूँ :
आपने दर्पण देखा है ?

※

प्यार का दर्द

प्यार का यह दर्द सहा नहीं जाता,
मुझ से अब कुछ कहा नहीं जाता,
पैदल चलने से पांव दुखते हैं,
घर में क्षण भर भी रहा नहीं जाता।

डाक्टर कहते हैं--कोई दवा नहीं है,
जिगर तल कर खाओ। तवा नहीं है।
ऐसे में बाजार जाना जरूरी है,
मगर मुई साइकिल में हवा नहीं है।

मुझे रह-रहकर गुस्सा आता है,
आदमी देखते-देखते बदल जाता है!
कल तक दिल कहां था, कौन जाने,
आज तो रह-रहकर मचल जाता है।

सुबह हो, दोपहर हो, शाम हो,
किसी का कोई भी काम हो,
इस खयाल से टाल देता हूं—
मेरी बदनामी हो, तेरा नाम हो!

मेरी कल्पना का पुत्र

यह मेरी कल्पना का पुत्र है—युवा,
आज से यह मेरा नेता हुआ !

मैं शताब्दियों से मार्ग का अन्वेषी,
मैं युगों से ज्ञान का साधक,
मैं वर्षों से सत्य की शोध में रत हूँ—
कि मैं मनु नहीं
मनु के वंश का प्रज्वलित दीप हूँ।
मुझ में अंधकार को जानने की जिज्ञासा है,
मेरा अहम् अबाध प्रकाश का प्यासा है।

मैं कहाँ नहीं गया ?—हर नगर, हर गाँव में
मैंने स्वयम् को विकीर्ण किया।
यात्रा को जिया।
प्रकृति के प्रत्येक गोपन तथा प्रत्यक्ष विस्तार में

रूप-रंग-रस-राग की गणना की मैंने
विज्ञान की रचना की मैंने ।
प्रत्येक चेतन को मैंने जाना,
                अचेतन को पहचाना,
परंतु स्वयम् अजाना हुआ ।

परिचय-लोप की यह कथा तो पुरानी हो गई,
मेरी दादी नानी की कहानी हो गई ।
मगर उसका दुख अब भी नया है,
जैसे, कोई जख्म छू गया है ।

किंतु आज बोध की प्रथम स्थिति में
जब परिचय की संज्ञा का पुनः आकर्षण हुआ,
अप्रत्याशित प्रतीति हुई ।
यह तो लोप नहीं है,
यह तो विकास है;
वह शुद्ध मैं था, यह मेरा भविष्य हुआ--
                मेरी कल्पना का पुत्र—युवा,
इसीलिए आज से यह मेरा नेता हुआ !

*

अलविदा

जा,
जा,
जा,
आदमक़द है
नहूसत
—तेरी जिंदगी।
नहीं,
नहीं,
नहीं,
प्यार नहीं
दूंगा।
आदमजात घृणा,
अलविदा !

आ,
आ,
आ,
तू
आ,
मेरे पास आ
री,
घड़ी भर के लिए सही
मुझे पी।
जी।
मेरी कल्पना, मेरी कामना, मेरी वासना
पी।
जी।
घड़ी भर के लिए सही,...
ज़िंदगी का घड़ा भर ले।
रहने के लिए घर ले।
(मैं खानाबदोश नहीं था, हो गया हूँ।
ढूंढ ले मुझे,
पी,
जी,
मैं खो गया हूँ।)

मगर
रुक जा ज़रा।
हाँ,
रुक जा ज़रा।

मेरी रातों पर
—झुक जा जरा—
मेरी बातों पर;
साँसों को महकने दे
दो क्षण,
बाँहों को बहकने दे
दो क्षण,
कल
फिर
तिर आएगी···
आदमक़द नहूसत;
—तेरी जिंदगी।
जहर होगा जीना।
कमीना···
लगेगा हद दरजे का तेरा रूप
धूप
में।
पसीना
आएगा।
तब······?
रहा जाएगा?
तब?···
कुछ न कहा जाएगा।
कल
तो
आदमजात घृणा—
अलविदा!
मेरी पोच नहीं मानेगी।

इसीलिए
आ
आज
आ
पी ले,
जी ले ।
नहीं,
नहीं,
नहीं,
जा···
अलविदा !
अलविदा !
अलविदा !
तुझको अपना प्यार नहीं दूंगा,
ये पौध, यह बहार नहीं दूंगा,
यह चैन, यह करार नहीं दूंगा,
तुझको अपना प्यार नहीं दूंगा,

※

उनका क्या होगा

जिनके आशीर्वाद मिले—
उनको मेरा नमन,
जिनका मिला प्यार—
उनका शुक्रिया;
जिन्होंने घृणा की—
वे थे हमराही,
जो हुए बाधक—
वे शुभचिंतक थे;
प्रतिद्वन्द्वी तो सारथी हैं मेरे आवेग के,
प्रतिस्पर्द्धी मेरी चेतना के संरक्षक;
जिन्होंने मुझ से कोई भी नाता नहीं जोड़ा—
मुर्दा हैं,
वे इतिहास में नहीं आएँगे।
मेरा क्या, मैं तो एक लहर-सा आया हूँ,
कुछ दिनों के लिए अपना एक चिह्न छोड़कर लौट जाऊँगा;
किंतु उनका क्या होगा—
जो तटस्थ हैं,
और जीवित होने का दावा करते हैं?